National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 202-203

जंगली तिरिछ बनाम शहरी तिरिछ

डॉ. नरेन्द्र कुमार मंडल
हिंदी शिक्षक, नेतरहाट आवासीय विद्यालय, नेतरहाट, लातेहार, झारखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

समकालीन कहानीकारों में उदय प्रकाश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उदय प्रकाश की कहानियों का संसार हमारे आस–पास के यथार्थ से निर्मित है। इनकी कहानियाँ हमें समकालीन कहानी के उस संसार में ले जाती है जो निजी और और आसपास का संसार है, जो सामाजिक विसंगतियों अंतर्विरोधों से भरा हुआ है। उदय प्रकाश की कहानियों में वह संसार वर्णित है जो दमन, शोषण तथा मूल्यहीनता का शिकार है। इन कहानियों में आम जीवन के सुख–दुःख के चित्र हैं।

'तिरिछ' अपने समय से बहुत आगे की एक चर्चित कहानी है, जिसकी गिनती उदय प्रकाश की क्ष्रेष्ठ कहानियों में की जाती है। यह कहानी अपने स्वरुप, विन्यास, शिल्प और अपने अपूर्व प्रभाव के कारण एक विलक्षण कहानी है। यह कहानी क्रमशः अमानवीय होती जा रही शहरी संस्कृति के विरुद्ध एक तीखी चोट है। यह कहानी 'वसुधैव कुटुम्बकम' तथा 'अतिथि देवो भवः' की पोषक भारतीय संस्कृति के बदलते आधुनिक स्वरुप पर करारी चोट करती है तथा समाज में सिमटती सहिष्णुता एवं बढती अमानवीयता का बिम्ब बड़ी सशक्तता से प्रस्तुत करती है।

'तिरिछ' कहानी में गाँव का एक सीधा–सादा, स्वाभिमानी, पढ़ा–लिखा, निम्नवर्गीय पिता अपने मकान और परिवार के बचाव में खड़ा है। इस कहानी में कथावाचक के पिता शहर जाने से डरते हैं क्योंकि शहर में लोगों की संवेदनशीलता लगातार कम होती जा रही है और मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। कई बार पिता शहर जाने के लिए घर से निकलते थे और कोई बहाना बनाकर वापस लौट आते थे लेकिन इस बार बार पिता का शहर जाना अनिवार्य है क्योंकि उन्हें अपने परिवार और घर को बचाना है। कथावाचक के अनुसार– "यह तीसरा सम्मन था और अगर इस बार भी वे अदालत में हाजिर न हुए तो गैर–जमानती वारंट निकलने का डर था। पेशी भी हमारे उसी मकान को लेकर थी, जिसमे हमारा परिवार रह रहा था। वकील को पिछले दो बार की पेशी में फीस भी नहीं दी जा सकी थी और कहीं अगर उसने लापरवाही दिखला दी और जज सनक गया तो वह हमारी कुड़की–डिक्री भी करवा सकता है।"[1] अपने घर और परिवार की पूरी जिम्मेवारी को अपने कन्धों पर उठाए पिता अंततः शहर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

शहर जाने से ठीक एक दिन पहले कथावाचक के पिता को एक तिरिछ काट लेता है, और पिता के जीवन की त्रासदी यहीं से प्रारंभ होती है। ऐसी मान्यता है कि तिरिछ के काटने पर चौबीस घंटे बाद व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। कहानी में तिरिछ के बारे में कहा गया है– "तिरिछ में काले नाग से सौ गुना ज्यादा उसमे जहर होता है। साँप तो तब काटता है, जब उसके ऊपर पैर पड़ जाए या कोई जबरदस्ती उसे तंग करे। लेकिन तिरिछ तो नजर मिलते ही दौड़ता है। पीछे पड़ जाता है।"[2] लेकिन पिता को जंगली तिरिछों से खतरा नहीं है बल्कि यहाँ उदय प्रकाश ने शहरी तिरिछ की ओर संकेत किया है। ये परिभाषा वास्तव में शहरी तिरिछ की है, जो बिना वजह आपके पीछे पड़ जाता है और आपका अस्तित्व मिटा कर ही चौन की साँस लेता है। इसलिए इस कहानी में उदय प्रकाश ने हमें जंगली तिरिछों से नहीं अपितु शहरी तिरिछों से बचके रहने का सलाह दिया है।

तिरिछ के काटने पर पिता उस तिरिछ का पीछा करके मार डालते हैं। ऐसा माना जाता है कि तिरिछ के काटने पर अगर उसे फौरन मार दिया जाए तो आदमी बच जाता है। इसीलिए कहानी में कथावाचक को पिताजी को लेकर उतनी चिंता नहीं होती है क्योंकि पिता ने उस तिरिछ को मार डाला था। साथ ही तिरिछ के जहर को समाप्त करने के लिए सारे प्रयास किए जा चुके थे। इस प्रकार जंगली तिरिछ के जहर को समाप्त करने के सारे प्रयास किये जा चुके थे और अगले दिन पिता शहर जाने वाली थी। लेकिन पिता का यह दुर्भाग्य ही था कि उन्होंने जंगली तिरिछ से अपने को बचा लिया था लेकिन शहरी तिरिछ उसे काटने के लिए शहर में इंतजार कर रहा था।

अगले दिन पिता जैसे ही शहर पहुँचते हैं कहानी में इसके बाद असल तिरिछों का आगमन होता है जो एक स्वाभिमानी और सीधे–सादे पिता को अमानवीय यातनाएँ देता है। कथावाचक के पिता शहर पहुँचने पर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की इमारत में दाखिल होते हैं, क्योंकि उनके गाँव का रमेश दत्त 'भूमि विकास सहकारी बैंक' में क्लर्क था। पिता को सिर्फ बैंक का ध्यान रहा होगा और वो स्टेट बैंक चले गए। शहर आने के दौरान पंडित राम राम औतार ने तिरिछ के जहर को उतारने के लिए धतूरे के बीजों का काढ़ा पिला दी थी। जिसका प्रतिकूल प्रभाव पिता पर पड़ रहा था और जिसके कारण पिता को बहुत प्यास लग रही थी। शायद वो बैंक में इसलिए भी प्रवेश कर गए ताकि वो रमेश दत्त से पानी माँग कर पी सके। वो चाहते तो किसी होटल में पानी मांगकर पी सकते थे लेकिन कुछ साल पहले शहर में पिता ने किसी होटल में पानी माँगा था, तो वहाँ काम करनेवाले नौकर ने उन्हें गाली दी थी। एक संवेदनशील पिता को यह बात बहुत बुरी लगी थी इसलिए वो शहर में किसी किसी होटल में पानी मांगने से बचते थे। यहाँ पर उदय प्रकाश ने शहरों में लगातार खत्म होती संवेदना पर व्यंग्य किया है।

बैंक में जाने पर पिता को शराबी समझकर बिना कोई बात किए ही पीटकर बाहर निकाल दिया जाता है। उनकी तलाशी लेकर उनके पास के अदालत के जरुरी कागजात और पैसे छीन लिए जाते हैं और बहुत मारा भी जाता है। कथावाचक के अनुसार– "पिताजी बैंक से बाहर आए तो उनके कपड़े फटे हुए थे और निचला होंठ कट गया था, जहाँ से खून निकल रहा था। आँखों के नीचे सूजन और कत्थई चकत्ते थे। ऐसे चकत्ते बाद में बैंगनी या नीले पड़ जाते हैं।"[3] पिताजी की फटेहाल स्थिति को देखकर उन्हें शराबी समझ लिया जाता है। शहर में किसी के पास इतना समय नहीं है कि वो किसी समझने के लिए अपना समय नष्ट करे इसलिए वो हर फटेहाल, गरीब, मजदूर, आम आदमी आदि के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं और उनका शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि शहर के हर क्षेत्र में तिरिछ अपने जहर के साथ बैठा हुआ है और जो अकारण ही आपके पीछे पड़ जाता है और जिनके जहर से बचना बहुत मुश्किल है।

कथावाचक के पिता बैंक के बाद पुलिस थाने में जाते हैं संभवतः अपने कागजात और पैसे, जो बैंक में छीन लिया गया था, उसका रिपोर्ट लिखाने के लिए। पुलिस थाने में उन्हें भिखमंगा समझ कर घसीटते हुए थाने से बाहर कर दिया जाता है। पुलिस, जिनके कन्धों पर हमारी

सुरक्षा का दायित्व है वही पुलिस एक सीधे–सादे ग्रामीण व्यक्ति के साथ जो दुर्व्यवहार करती है वह घोर निंदनीय है। शहरों में कई प्रकार के जहरीले तिरिछ मौजूद हैं जिनसे पिता का सामना होता है और इनके जहर से पिता के बचने की संभावना कम होती जाती है। इस प्रकार एक सीधे–सादे ग्रामीण व्यक्ति को शहर में हर जगह तुच्छ समझा जाता है और बार–बार उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। यह कहानी शहरों में लगातार खत्म होती मानवीय संवेदना और अमानवीय होती जा रही शहरी संस्कृति के विरुद्ध एक तीखा प्रहार है। शहर के लोगों ने पिता को शराबी, चोर, भिखारी, दुश्मन देश का जासूस आदि समझकर उनको शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। शहरी लोगों के इस अत्याचार को उदय प्रकाश ने इस कहानी में अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है।

कहानी का अंतिम पड़ाव और भी भयावह और हमारी चेतना को प्रभावित करने वाला है। पिता थाने के बाद इतवारी कोलोनी से होते हुए नेशनल रेस्टोरेंट के सामने पहुँचते हैं। जहाँ उन्हें पाकिस्तानी जासूस करार दिया जाता है और लोग बड़े ही क्रूर होकर उनपर पर पत्थरों से हमला कर देते हैं। वे प्राण–रक्षा के लिए तड़प रहे थे और लगातार उनके चेहरे पर ईंट और पत्थर फेंके जा रहे थे। अंततः पिता की मृत्यु हो जाती है लेकिन यह जंगली तिरिछ के काटने से नहीं अपितु शहरी तिरिछों के काटने से होती है जैसा कि पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट से भी प्रमाणित होता है। "पोस्ट–मार्टम में पता चला था कि उनकी हड्डियों में कई जगह फ्रैक्चर था, दायीं आँख पूरी तरह फूट चुकी थी, कॉलर बोन टूटा हुआ था। उनकी मृत्यु मानसिक सदमे और अधिक रक्तस्राव के कारण हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार उनका अमाशय खाली था, पेट में कुछ नहीं था। इसका मतलब यही हुआ कि धतूरे के बीजों का काढ़ा उल्टियों द्वारा पहले ही निकल चुका था।"[4]

इस प्रकार पिता की मौत कई शहरी तिरिछों के एक साथ काटने से होती है। अदालती सम्मन का तिरिछ और अदालत तक पहुँचने के दौरान मिले अपमान, तिरस्कार, शहरी लोगों का संदेहास्पद व्यवहार और अवैज्ञानिक किस्म की चिकित्सा के तिरिछ, इन सब तिरिछों की वजह से पिता की मौत हुई। अदालत तक पहुँचने के दौरान एक सम्मानित ग्रामीण व्यक्ति और भूतपूर्व प्रधानाचार्य को कदम–कदम पर शहरी तिरिछों का सामना करना पड़ता है और अंततः वे शहरी तिरिछों के सामने पराजित होकर अपना दम तोड़ देते हैं। गाँव का एक सीधा–सदा ग्रामीण बुजुर्ग शहर की अमानवीयता के कारण ही मारा जाता है। शहरी लोगों की संवेदनशून्यता एवं क्रुरताओं पर यह कहानी जोरदार तरीके से चोट करती है। अतिआधुनिकता के वर्तमान परिवेश ने मानवीय संवेदनाओं का बहुत ह्रास किया है, जिस ओर यह कहानी सशक्तता से इंगित करती है। पिता पर फेंके हुए पत्थर वास्तव में परंपरागत मानवीय मूल्यों पर विकृत अत्याधुनिकता के द्वारा फेंके गए पत्थर हैं।

कहानी के अंत में पिता की तमाम यातनाओं को याद करते हुए पुत्र कहता है कि "मुझे आखिरकार अब तिरिछ का सपना क्यों नहीं आता है ?"5 तो लगता है कि जैसे पुत्र ने पिता के चौबीस घंटों में इतने किस्म के भयानक तिरिछों को देख लिया कि अब तिरिछ स्वप्न में नहीं अपितु हकीकत में दिखाई देते हैं। जिन भयावह चीजों से सामना यथार्थ में ही हो जाए तो फिर वे स्वप्न में नहीं आते हैं। असल तिरिछ अब जंगल से गायब होकर शहर में आ गया है। आप चाहे जितना उनका सिर कुचल दें, जंगली तिरिछ से आप बच जाएँगे लेकिन इन शहरी तिरिछों से बचना नामुमकिन है। जिस शहर में अदालत का रास्ता कोई नहीं बताता, प्यासे को कोई पानी तक नहीं पिलाता, सम्मानित ग्रामीण व्यक्ति को सिर्फ उसकी भाव–भंगिमा और वेशभूषा के आधार पर संदेह की नजरों से देखा जाता हो। जिस अदालत में व्यक्ति न्याय के लिए जाता है पर वहाँ तक पहुँच ही नहीं पाता है। ऐसे कठिन समय में आम आदमी को अपने अस्तित्व को बचाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है।

संदर्भ सूची

1. उदय प्रकाश– तिरिछ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली 2010, पृष्ठ– 30
2. वही, पृष्ठ– 25
3. वही, पृष्ठ– 36
4. वही, पृष्ठ– 45
5. वही, पृष्ठ– 47